

mit einem andern Worte; es ist offenbar व्यूढकङ्कट AK. 2, 8, 33 gemeint.

2. कर, चक्रिर्मि; pot. चक्रियास्; aor. अकारिष्म und अकारिष्म, अकारोत्; intens. चर्कृथि, चर्कृतात्, चर्किराम, चर्किरन्. *gedenken, Jmdes (gen.) rühmend erwähnen*: मृच्छकर्मर्यवतः क्रतुप्रा दधिक्वाणः RV. 4, 39, 2. दिवस्पृथिव्या उत चर्किराम 1. आदिते अस्य वीर्यस्य चर्किरन् 1, 131, 5. आदिष्मन्स्य देव्यस्य चर्किरन् 10, 92, 3. VALAKH. 6, 5. अथ स्म नो मघवं चर्कृतादित् *gedenke unser!* RV. 1, 104, 8 (wo ŚA. und DURGA einen abl. annehmen). ममेदुग्रस्य चर्कृथि AV. 20, 127, 11. यच्छुभ्रया इमं क्वं दुर्मयं चक्रिया उत *wenn du unsern Ruf hörst und unvergessen desselben gedenkst* RV. 8, 43, 18. दधिक्वाणो अकारिष्म 4, 39, 6. अकारोत् 3. दिते: पुत्राणामदितेरेकार्यम् AV. 7, 7, 1. Zum intens. Stamme dieser Wurzel scheint चर्कृपे gezogen werden zu müssen, als 3. sg. med.: ऋषीणां वा यः तपे गुह्ये वा चर्कृपे गिरा RV. 10, 22, 1. वसूनां वा चर्कृप इत्यन्धिया वा पृथ्वी रोदस्योः 74, 1. सचयोरिन्द्रश्चर्कृष आ उपानसः सपर्यन्. नद्योर्विब्रतयोः प्रूर इन्द्रः 103, 4. Der letzten Stelle entspricht der entstellte Vers: सदा व इन्द्रश्चर्कृषदा उपो नु स सपर्यन्. न देवो वृतः प्रूर इन्द्रः SV. 1, 3, 1, 3. — Vgl. कार, कीरि, कीर्ति (was schon LASSEN erkannt hat; s. LA. 203 u. कृ), क्रतु, चर्कृति, चर्कृत्य.

3. कर (कृ), किरति DRĀTUP. 28, 116. P. 7, 1, 100; चकार 7, 4, 11, Sch.; कारिष्यति; कर्तिता und करोता Vop. 13, 2; अकारोत्, ved. कारिषत् (s. u. सम); gerund. °कीर्य; pass. कीर्यते; partic. कीर्ण; med. reflex. किरते; अकीर्ण (vgl. u. अय) Vop. 24, 12. 1) *ausgiessen, ausschütten, austreuen, werfen, schleudern*: यो मिर्मुकिरद्वाडुनिं च RV. 1, 32, 13. वारिधरस्य वारि किरतः AMAR. 11. घापः कीर्यमाणाः MBh. 3, 10982. किरण्कुरसकृन्नाणि पर्जन्य इव वृष्टिमान् 4, 1898. 1903. 3, 14760. 14, 2158. अकारिष्ठा गिरिन् BHATT. 13, 80. दिशि दिशि किरति सजलकणजालं नयननलिनमिव विगलितनालम् Gtr. 4, 14. partic. कीर्ण *ausgeschüttet, ausgestreut, hierhin und dorthin geworfen, zerstreut, auseinandergeworfen* H. 1473. an. 2, 136. MED. n. 6. कीर्णपुष्पफलदुमाः R. 5, 16, 17. कीर्णपु वृक्षेषु 93, 17. कीर्णशिलाटा aufgelöste Locken DAÇAK. in BENF. Chr. 179, 15. *ausgetheilt* (दत्त) MED. — 2) *beschütten, bestreuen, überschütten*: पादयैः । किरदिरिव तत्रस्त्रानागान्पुष्पांश्चवृष्टिभिः MBh. 1, 1310. दिशश्च पुष्पैश्चकारुः BHATT. 3, 5. कुरिश्चेष्टतरं किरन् शरैः पयोधरः शैलमिवाशु वृष्टिभिः R. 5, 42, 10. 41, 24. BHATT. 17, 42. शक्तितोमरनारचैः — कीर्यमाणाः DRAUP. 8, 6. R. 1, 28, 19. partic. कीर्ण *bestreut, überdeckt, erfüllt* H. an. 2, 136. दैर्भैः — कीर्णवर्त्मा ÇĀK. 7. भस्मास्त्रिशकलकीर्णा (वसुधा) PĀNĀK. I, 239. अतर्त्तमपि स्वभावप्रचिभिः कीर्णं द्विजानां (von Zähnen) गणैः BHARTR. 1, 2. तैरियं पृथिवी प्रैरैः — कीर्णा R. 1, 16, 32. 3, 72, 5. नानावृत्तैः प्रुभिः कीर्णम् (वनम्) 74, 8. शङ्कुभिः कीर्णं अथे AK. 3, 4, 26, 205. — caus. s. u. अन्वव. — desid. चिकारिषति P. 7, 2, 75. Vop. 19, 7. — intens. चाकर्ति P. 7, 4, 92, Sch.

— व्यति, partic. व्यतिकीर्ण *zerstreut liegend*: यया वज्रेण वै दीर्णं पर्वतस्य मच्छिः । व्यतिकीर्णाः प्रदृश्यते तथा सूता महीतले ॥ MBh. 4, 830.

— अनु 1) *hinstreuen*: यास्तै धाना अनुकिरामि AV. 18, 3, 69. 4, 26. — 2) *überdecken, erfüllen*: वणिग्भिश्चांन्वकीर्यत नगराणि MBh. 1, 4340. अनुकीर्णं महारण्यं ब्राह्मणैः समपद्यत 3, 964. 8470. DRAUP. 6, 2. 8, 48. R. 4, 44, 18.

— अय 1) *ausspritzen, austreuen*: गतो ऽपकिरत्यम्भः Vop. 23, 6. अ-पकिरति कुसुमम् P. 1, 3, 21, VArtt. 4, Sch. SIDDH. K. zu P. 6, 1, 142. — 2) *niederwerfen*: महो ऽपकिरति मलम् Vop. 23, 6. — 3) *mit den Füßen scharren*: गतो ऽपकिरति SIDDH. K. a. a. O. In dieser Bed. gew. अपस्किरते P. 6, 1, 142. 1, 3, 21, VArtt. 4. अपस्किरते वृषभो हृष्टः । अपस्किरते कुक्कुटो (Hahn) भक्ष्यार्थो । अपस्किरते आश्वयार्थो, d. i. आलिख्य वित्तिपति Sch. Vop. 23, 6. West.: *mingere, cacare* (de quadrupedibus et avibus), durch अपस्कर Excremente verleitet.

— अग्नि *übergießen, überschütten, bedecken, erfüllen*: ततस्ते वज्रभिर्योगैः कैवर्ता मत्स्यकाङ्गिणः । गङ्गायमुनयोर्वारि ब्रह्मैरभ्यकिरस्ततः ॥ MBh. 13, 2655. मुक्ताकुसुमाभिकीर्णं SADDH. P. 4, 12, a. अन्वकीर्यत शेकेन भूय एव महीपतिः R. 2, 14, 53.

— अय 1) *hinstreuen* KAUC. 46. 31. 32. *hineinstreuen*: पौसून् ÂÇV. GĀHJ. 4, 5. *ausgiessen, austreuen, ausschütten*: अवाकिरन् शरान् MBh. 3, 848. सप्तद्वारावकीर्णां च न वाचमन्तां वदेत् M. 6, 18. *Samen vergiessen*: यो ब्रह्मचार्यवकिरेत् — आश्वस्य जुहोति कामावकीर्णो (also in der Bed. von अवकीर्णिन् *der Samen vergossen hat*) ऽस्म्यवकीर्णो ऽस्मि काम कामाय स्वाहा TAITT. ÂR. 2, 18. — 2) *abschütteln, abwerfen, in Stich lassen*: स्थानि वासांसि — अवकीर्णितरीयाणि सभायां समुपाविशन् MBh. 2, 2289. सा मां हिमवतः प्रस्ये मुपुवे मेनकाप्सराः । अवकीर्य च मा परात्मनमिवासती ॥ 1, 3057. — 3) *bestreuen, überschütten, überdecken, erfüllen, übergießen* (in übertr. Bedeut.): तेन (रत्नसा) देवानवाकिरत् MBh. 1, 1475. 3, 8810. R. 2, 43, 13. 3, 79, 5. कपालचूर्णानावकीर्य सुच. 1, 37, 5. RAGH. 2, 10. ततः शरसकृत्वेण रथं पार्थस्य — अवाकिरन् MBh. 4, 1844. 2044. 1, 5461 (ohne obj.). 3, 11966. 14993. ÂRG. 7, 2. R. 1, 28, 15. 3, 32, 10. यन्मामवकारिष्यति (रत्नः) 2, 30, 13. (त्रालिनम्) वाससाक्षादयामास माल्येनावचकार च 4, 24, 23. अवकीर्यन्धनेर्गोमयमिश्रेः सुच. 2, 75, 13. वज्रिनेवावकीर्यते 486, 11. अवकीर्णं रणयाप्रुभिः R. 4, 22, 24. 5, 16, 13. 15. सुच. 1, 104, 8. 113, 4. पूयधिरावकीर्णमांसकाये 266, 16. (तीर्थानि) अवकीर्णानि — तपस्विभिः MBh. 1, 7840. चन्द्रतारावकीर्णं (व्योमन्) R. 3, 21. कामावकीर्णो ऽस्मि PĀR. GĀHJ. 3, 12. JĀG. 3, 281. अवकीर्णो हि समरे वीरो दुष्प्रज्ञया तदा MBh. 15, 451. तुमुलकरावृष्टिहासावकीर्णं MEGH. 53. सर्वविधसज्जता-त्यवकीर्णं LALIT. Calc. 1, 8. — 4) med. (P. 3, 1, 87, VArtt. 10) und pass. reflex. a) *sich ausstrecken, sich ausbreiten, auseinanderfallen*: अवकिरते कृस्तो स्वयमेव, अवाकीर्ण P. 3, 1, 87, VArtt. 10, Sch. समतादवकीर्यत (पावकः) R. 1, 38, 14. ततो वायुमकाराज दिव्यैर्माल्यैः समन्वितः । अमितः पाण्डवं चित्रैरवचक्रे समततः ॥ MBh. 3, 12306. अवकीर्णजटाभार adj. DAÇAK. 1, 34. — b) *verrinnen*: असंतुष्टस्य विप्रस्य तेजो विद्या तपो यशः । स्रवतो-न्मलौल्येन ज्ञानं चेवावकीर्यते ॥ Bnig. P. 7, 15, 19. — c) *abfallen, untrenn werden*: अवाकीर्यत कनीयांसौ स्तोमावुपागुः, यज्ञावकीर्णा हि PĀNĀK. Br. in Ind. St. 1, 34, N. — Vgl. अवकार, अवकीर्णिन्.

— अन्वव *herumstreuen*: पवैरन्ववकीर्य JĀG. 1, 230. — caus. *herumstreuen lassen*: तिलांश्चांन्ववकीरयेत् (!) MBh. 13, 4291.

— अन्वव *beschütten, bestreuen, überdecken*: रत्नसाभ्यवकीर्णानि R. 2, 33, 19. त्रयस्तु संक्रमास्तत्र परसैन्यागमे सति । यत्नैरभ्यवकीर्यते परिखासु समततः ॥ 5, 72, 14. LALIT. Calc. 6, 14. 141, 12.

— पर्यव *überschütten*: दिव्यैश्च पुष्पैस्तै देवाः समतात्पर्यवाकिरन् MBh. 3, 13596. अस्तिभिः पट्टिशैः प्रूलैर्गदाभिश्च 14909.